

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ

Surah 74 — Al-Muddaththir (The Cloaked One) · Meccan · 56 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

ऐ (मेरे) कपड़ा ओढ़ने वाले (रसूल) उठो

2

قُمْ فَأَنْذِرْ

और लोगों को (अज्ञाब से) डराओ

3

وَرَبِّكَ فَكَبِّرْ

और अपने परवरदिगार की बड़ाई करो

4

وَتِيَابَكَ فَطَهِّرْ

और अपने कपड़े पाक रखो

5

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ

और गन्दगी से अलग रहो

6

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ

और इसी तरह एहसान न करो कि ज्यादा के खास्तगार बनो

7

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ

और अपने परवरदिगार के लिए सब्र करो

8

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ

फिर जब सूर फूँका जाएगा

9

فَذَلِكَ يَوْمٌ مِّنْهُ يَوْمٌ عَسِيرٌ

तो वह दिन काफ़िरों पर सख्त दिन होगा

10

عَلَى الْكُفْرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ

आसान नहीं होगा

11

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا

(ऐ रसूल) मुझे और उस शख्स को छोड़ दो जिसे मैंने अकेला पैदा किया

12

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا

और उसे बहुत सा माल दिया

13

وَبَنِينَ شُهُودًا

और नज़र के सामने रहने वाले बेटे (दिए)

14

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا

और उसे हर तरह के सामान से वुसअत दी

15

ثُمَّ يَظْمَعُ أَنِّ أَزِيدَ

फिर उस पर भी वह तमाअ रखता है कि मैं और बढ़ाऊँ

16

كَلَّا ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ لَعَايِتِنَا عَنِيدٌ ۚ۱

ये हरगिज़ न होगा ये तो मेरी आयतों का दुश्मन था

17

سَأَرْهُقُهُ ۚ صَعُودًا

तो मैं अनक़रीब उस सख्त अज़ाब में मुब्तिला करूँगा

18

إِنَّهُ ۚ فَكَّرَ وَقَدَّرَ

उसने फ़िक्क की और ये तजवीज़ की

19

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ

तो ये (कम्बख़्त) मार डाला जाए

20

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ

उसने क्यों कर तजवीज़ की

21

ثُمَّ نَظَرَ

फिर ग़ौर किया

22

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ

फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बना लिया

23

ثُمَّ أَدْبَرَ وَأَسْتَكْبَرَ

फिर पीठ फेर कर चला गया और अकड़ बैठा

24

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ^۹ يُؤَثِّرُ

फिर कहने लगा ये बस जादू है जो (अगलों से) चला आता है

25

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ

ये तो बस आदमी का कलाम है

26

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ

(खुदा का नहीं) मैं उसे अनकरीब जहन्नुम में झोंक दूँगा

27

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ

और तुम क्या जानों कि जहन्नुम क्या है

28

لَا تُبْقَى وَلَا تَذَرُ

वह न बाक़ी रखेगी न छोड़ देगी

29

لَوْ أَحَۡتَ^۹ لِلْبَشَرِ

और बदन को जला कर सियाह कर देगी

30

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ

उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते मुअय्यन) हैं

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۚ ۚ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً ۚ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
 لِيَسْتَيَقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ وَيَزِدَّادَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِيْمَنًا ۚ ۚ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ
 أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ ۚ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۚ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا
 أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ
 جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ

और हमने जहन्नुम का निगेहबान तो बस फरिश्तों को बनाया है और उनका ये शुमार भी काफिरों की आजमाइश के लिए मुकर्रर किया ताकि अहले किताब (फौरन) यक्रीन कर लें और मोमिनो का ईमान और ज्यादा हो और अहले किताब और मोमिनीन (किसी तरह) शक न करें और जिन लोगों के दिल में (निफ़ाक का) मर्ज है (वह) और काफिर लोग कह बैठे कि इस मसल (के बयान करने) से खुदा का क्या मतलब है यूँ खुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है हिदायत करता है और तुम्हारे परवरदिगार के लशकरो को उसके सिवा कोई नहीं जानता और ये तो आदमियों के लिए बस नसीहत है

كَلَّا وَالْقَمَرَ

सुन रखो (हमें) चाँद की कसम

وَالَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ

और रात की जब जाने लगे

وَالصُّبْحِ إِذَا أَصْفَرَ

और सुबह की जब रौशन हो जाए

إِنَّهَا لِأَحْدَى الْكُبَرِ

कि वह (जहन्नुम) भी एक बहुत बड़ी (आफ़त) है

36

نَذِيرًا ۚ لِلْبَشَرِ

(और) लोगों के डराने वाली है

37

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ

(सबके लिए नहीं बल्कि) तुममें से वह जो शरूष (नेकी की तरफ़) आगे बढ़ना

38

كُلُّ نَفْسٍ ۚ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ

और (बुराई से) पीछे हटना चाहे हर शरूष अपने आमाल के बदले गिर्द है

39

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ

मगर दाहिने हाथ (में नामए अमल लेने) वाले

40

فِي جَنَّاتٍ ۚ يَتَسَاءَلُونَ

(बेहिश्त के) बागों में गुनेहगारों से बाहम पूछ रहे होंगे

41

عَنِ الْمُجْرِمِينَ

कि आखिर तुम्हें दोज़ख में कौन सी चीज़ (घसीट) लायी

42

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ

वह लोग कहेंगे

43

قَالُوا ۚ لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ

कि हम न तो नमाज़ पढ़ा करते थे

44

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ

और न मोहताजों को खाना खिलाते थे

45

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ

और अहले बातिल के साथ हम भी बड़े काम में घुस पड़ते थे

46

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ

और रोज़ जज़ा को झुठलाया करते थे (और यूँ ही रहे)

47

حَتَّىٰ أَتَيْنَا الْيَقِينَ

यहाँ तक कि हमें मौत आ गयी

48

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفْعَةُ الشَّافِعِينَ

तो (उस वक्त) उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी

49

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ

और उन्हें क्या हो गया है कि नसीहत से मुँह मोड़े हुए हैं

50

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفَرَةٌ ۖ

गोया वह वहशी गधे हैं

51

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۖ

कि येर से (दुम दबा कर) भागते हैं

52

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنشُرَةً ۚ

असल ये है कि उनमें से हर शख्स इसका मुतमइनी है कि उसे खुली हुई (आसमानी) किताबें अता की जाएँ

53

كَأَلَّا ۚ بَلْ لَا يَخَافُونَ أَلْءَاخِرَةَ

ये तो हरगिज़ न होगा बल्कि ये तो आखेरत ही से नहीं डरते

54

كَأَلَّا إِنَّهُ ۚ تَذْكِرَةٌ ۚ

हाँ हाँ बेशक ये (कुरान सरा सर) नसीहत है

55

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۚ

तो जो चाहे उसे याद रखे

56

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

और खुदा की मशीयत के बग़ैर ये लोग याद रखने वाले नहीं वही (बन्दों के) डराने के काबिल और बख्शिश का मालिक है